प्लेटो का शिक्षा सिद्धांत एवं योजना

लालाराम

सहायक आचार्य, राजनीति विज्ञान (विद्या सम्बल योजना)
राजकीय महाविद्यालय, फतेहगढ जिला जैसलमेर

''वह (प्लेटो) पहला एवं अतिम विज्ञान है जो मानता है कि किसी राज्य को सर्वाधिक धनी अथवा सर्वाधिक महत्वाकांक्षी अथवा सर्वाधिक चालाक द्वारा नहीं अपितु सर्वाधिक प्रज्ञावान द्वारा शासित होना चाहिये। '' (पी.बी. शैली)

प्लेटो का जन्म 428 ई.पू. प्राचीन यूनान के एथेन्स नामक राज्य में हुआ था। यद्यपि युवावस्था में प्लेटो एथेन्स की राजनीति में भाग लेने की महत्वाकांक्षा रखता था, किन्तु उसने जिस घृणित ढंग से राजनीतिक घटनाचक्र को घटते देखा, उसके परिणामस्वरूप प्लेटो ने व्यावहारिक राजनीति के स्थान पर दर्शनशास्त्र की शरण लेना उचित समझा। उसने स्पार्टा द्वारा एथेन्स की पराजय देखी, एथेन्स में अल्पवर्गीय निरंकुश शासन देखा और उसके बाद वहां ऐसे लोकतंत्र की स्थापना भी देखी जिसके प्रमुख शासकों ने मिथ्या आरोप लगाकर सुकरात जैसे महान् संत, दार्शनिक एवं सत्यान्वेषी को मृत्यूदण्ड की सजा दी, जो प्लेटो का गुरू भी था। इस दुर्घटना ने प्लेटो के हृदय में व्यावहारिक राजनीति के प्रति वैराग्य की भावना पैदा कर दी और वह अपने गुरू सुकरात की दार्शनिक – चिन्तन परम्परा का अनुकरण करते हुए इस निष्कर्ष पर पहुंचा कि राजनीतिक (सार्वजनिक) जीवन के कष्टों का अंत तब तक नहीं हो सकता जब तक कि राज्य के शासक दार्शनिक नहीं बन जाये, अथवा दार्शनिकों को ही शासक नहीं बना दिया जाये।

इस विचाराधारा को मूर्तरूप देने के लिये प्लेटो ने शिक्षा सिद्धांत प्रस्तुत किया। 347 ई.पू.. में 81 वर्ष की आयु में प्लेटो की मृत्यु हुई। अपनी जीवन अवधि में प्लेटो ने कुल 36 ग्रंथ लिखे।

अपने गुरू सुकतरात की मृत्यु के बाद उसने कई वर्षो तक यूनान, मिश्र और इटली की यात्रा करके वहां की शासन प्रणालियों का अध्ययन किया। कुछ विद्वानों के अनुसार वह भारत भी आया, जहां उसने वेदांत की शिक्षा ली। अपनी विदेश यात्राओं से लौटकर प्लेटो ने दर्शनशास्त्र के विस्तृत अध्ययन और निरूपण के लिए 387 ई.पू. में एथेन्स में ''अकादमी'' की स्थापना की जिसने प्राचीन यूनान को अनेक विधिवेत्ता और राजमर्मज्ञ प्रदान किए। प्लेटो का विख्यात शिष्य अरस्तु इसी अकादमी की देन था। प्लेटो के चिंतन पर सुकरात की तर्कविद्या की गहरी छाप देखने को मिलती है। उसने रिपब्लिक की रचना संवाद शैली में की है। इन संवादो का प्रमुख पात्र स्वयं सुकरात है जो तरह तरह के प्रश्न उठाता है, अपने शिष्यों को उन पर भिन्न भिन्न दृष्टिकोण प्रस्तुत करने का अवसर देता है, और अंत में उन सब दृष्टिकोणों का खण्डन करके अपना समाधान प्रस्तुत करता है। प्लेटों को सुकरात की दूसरी महत्वपूर्ण देन थी, दृष्टान्तों का प्रयोग। सुकरात के पद्–चिन्हों पर चलते हुए प्लेटो ने नैतिकता, राजनीति और आदर्श जीवन की समस्याओं को सुलझाने के लिये कहीं कला के क्षेत्र से दृष्टान्तों का चयन किया है, कहीं प्रकृति के क्षेत्र से। प्लेटो के समय यूनान में बौद्धिक अराजकता फैली हुई थी। उच्छृंखलतावादी व नास्तिकतावादी समाज व राज्य की पवित्रता में कोई विश्वास नहीं करते थे। नास्तिकतावादी मनुष्यकृत सामाजिक व राजनीतिक बंधनों के विरोधी थे। इस स्थिति के संबंध में प्लेटो का विश्लेषण यह था कि अराजकता का मुख्य कारण लोगों में फैला हुआ अज्ञान था। लोगों का हित किस में था, इसे न तो लोग जानते थे और न उनके नेता सही मार्गदर्शन कर सकते थे। दोनों अज्ञानी थे और संकट इस बात का था कि अंधे–अंधों का मार्गदर्शन कर रहे थे।

उनके अनुसार अज्ञान रोग और ज्ञान उसकी औषधि थी। अपने ''रिपब्लिक'' में इस कारण उन्होंने एक ऐसे दार्शनिक शासक का विचार प्रस्तुत किया है, जो ज्ञान का रूप होने के कारण यूनान की सब बुराईयों का उपचार था। इसी कारण कहा जाता है कि प्लेटो के विचार उपचारात्मक और चिकित्सात्मक है तथा उनका एक मात्र उद्देश्य अज्ञान के रोग से देश को छुटकारा दिलाना था।

प्लेटों ने अकादमी के साथ–साथ अनेक ग्रंथों की रचना की परन्तु उनमें सर्वोत्तम ग्रंथ रिपब्लिक को ही माना जाता है, जिसने प्लेटो को राजनीति, दर्शन शिक्षा, नीति शास्त्र, मनोविज्ञान, कला आदि के क्षेत्र में एक मेधावी व अतिश्रेष्ठ विचारक के रूप में प्रतिष्ठित किया है। प्लेटो ने अपने सभी ग्रंथों की रचना में प्रश्नोत्तर शैली (संवाद शैली) को अपनाया है, जो वास्तव में उसके गुरू सुकरात की शैली है। इस शैली के अनुसार किसी विषय में अंतिम सत्य की खोज के लिये विभिन्न व्यक्तियों में वार्तालाप (संवाद) होता है और यह वार्तालाप प्रश्न एवं उत्तर का रूप धारण करता है। रिपब्लिक के तीसरे भाग में प्लेटो ने शिक्षा के पाठ्यक्रम एवं प्रणाली पर विस्तृत एवं गहन विचार किया है। वह शिक्षा को आदर्श राज्य व्यवस्था

की स्थापना एवं संचालन का एक श्रेष्ठ एंव सकारात्मक साधन मानता है। वह शिक्षा द्वारा सुयोग्य सहायक वर्ग एंव संरक्षक वर्ग का निर्माण संभव मानता है। प्लेटो ने शिक्षा प्रणाली का इतना उत्तम विश्लेषण प्रस्तुत किया है कि कुछ विद्वानों ने 'रिपब्लिक' को शिक्षा पर लिखा गया ग्रंथ मान लिया है। प्लेटो के आदर्श राज्य में तीन वर्ग पाये जाते है – दार्शनिक वर्ग, सैनिक वर्ग तथा उत्पादक वर्ग। ये तीनों वर्ग मानव– आत्मा के विवेक, साहस तथा वासना (क्षुधा) नामक तीन तत्वों का ही विकसित रूप होते है। इन तीनों वर्गो का विभाजन प्लेटो ने अपने शिक्षा सिद्धांत के माध्यम से ही किया है।

प्लेटो का शिक्षा सिद्धांत इस मान्यता पर आधारित है कि व्यक्ति एवं समाज के उत्थान में सबसे बडी बाधा अज्ञान है। प्लेटो के अनुसार अज्ञान को समाप्त करने का एक मात्र उपाय ज्ञान अर्थात् शिक्षा है। प्लेटो का यह कथन महत्वपूर्ण है ''शिक्षा बौद्धिक रोग के लिये बौद्धिक उपचार है।'' प्लेटो का विश्वास है, ''यदि सद्गुण ज्ञान है तो उसकी शिक्षा दी जा सकती है।'' अतः उसने 'रिपब्लिक' में शिक्षा के सिद्धांत व शिक्षा की योजना पर अत्यंत विस्तार से विचार किया है।

प्लेटो के शिक्षा सिद्धांत की प्रमुख मान्यताएं

1 – **शिक्षा का दार्शनिक आधार** – शिक्षा का उद्देश्य मात्र वस्तुगत जगत् का ज्ञान प्राप्त करना नहीं है, अपितु इस वस्तुगत जगत् के मूल में निहित सत् का पूर्व ज्ञान प्राप्त करना है। शिक्षा ऐसा वातावरण देती है कि आत्मा का यह ज्ञान स्वतः ही प्रकट हो जाये। प्लेटो के अनुसार शिक्षा 'आत्म नेत्र'' को प्रकाशोन्मुख करती है।

2 – शिक्षा द्वारा मानव मस्तिष्क का विकास – शिक्षा का कार्य ऐसा स्वस्थ वातावरण बनाना है कि मानव मस्तिष्क की सक्रियता सद्गुण की ओर आकर्षित हो और उसका पालन करे। जब शिक्षा द्वारा मानव मस्तिष्क को ''दर्शन'' एवं ''सत्य'' संबंधी ज्ञान प्राप्त होता है तो उसके मस्तिष्क का पर्याप्त विकास भी होता है।

3 – शिक्षा के विभिन्न पक्ष एवं उद्देश्य –

;पद्ध – वैयक्तिक पक्ष एवं उद्देश्य – शिक्षा सद्गुण में वृद्धि करती है।

;पपद्ध – सामाजिक पक्ष एवं उद्देश्य – शिक्षा विभिन्न सामाजिक वर्गों के बीच तालमेल स्थापित करती है।

;पपपद्ध – राजनीतिक पक्ष एवं उद्देश्य – शिक्षा व्यक्ति एवं राज्य के हितों में सामंजस्य स्थापित करती है।

4 – शिक्षा जीवन–पर्यन्त चलती है – शिक्षा का संबंध शरीर एवं आत्मा दोनों से ही है, अतः इसे जीवन के अंत तक चलते रहना चाहिये।

5 – सैद्धांतिक एवं प्रयोगात्मक शिक्षा – प्लेटो का मत है कि विद्यार्थी को पहले सैद्धांतिक शिक्षा दी जानी चाहिये और उसके बाद प्रयोगात्मक शिक्षा।

शिक्षा के विभिन्न स्तर एवं पाठ्यक्रम

यद्यपि प्लेटो की शिक्षा योजना पर स्पार्टा एवं एथेन्स की शिक्षा–योजना का पर्याप्त प्रभाव पड़ा है, किन्तु इसका अंतरंग भाग सवयं प्लेटो की देन है। इस दृष्टि से प्लेटो में मौलिकता दिखाई पडती है। उसने शिक्षा का उद्देश्य सद्गुण की वृद्धि माना है और उसे न्याय एवं आदर्श राज्य की स्थापना का सकारात्मक साधन माना है। प्लेटो ने शिक्षा को जीवन पर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया बताया है, किन्तु स्पष्टतः उसने 6 साल की आयु से 50 साल तक की आयु से संबंधित शिक्षा योजना का विवरण दिया है। संक्षेप में, प्लेटो की शिक्षा योजना अर्थात् शिक्षा के विभिन्न स्तरों के पाठ्यक्रम का सामान्य विवरण निम्नलिखित रूप में है –

अ – शिक्षा का प्रथम स्तर

ब – शिक्षा का द्वितीय स्तर तथा

स – दार्शनिक शासक का व्यावहारिक प्रशिक्षण

(अ) – शिक्षा का प्रथम स्तर – 6 से 20 वर्ष

1 – शिक्षा 6 वर्ष की आयु से शुरू होगी। शिक्षा के पहले 6 वर्षो में विद्यार्थियों को नैतिक एवं धार्मिक शिक्षा दी जाएगी। इस आयु के विद्यार्थी अनुकरण द्वारा सीखते है, अतः विद्यार्थियोयं को देवी – देवताओं की ऐसी कथाएं बताई जानी चाहिए जो प्रेम, सत्य, दया आदि के सद्गुणों से युक्त हो।

2 – आगामी 6 वर्षो (12 से 18 आयु वर्ग) में विद्यार्थियों को मुख्यतः व्यायाम व संगीत की शिक्षा दी जानी चाहिये। इससे विद्यार्थियों में क्रमशः आत्म शक्ति व विचार – शक्ति का विकास होगा। एक स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मस्तिष्क रह सकता है, अतः व्यायाम की शिक्षा आत्म–बल की वृद्धि करती है। प्लेटो ने संगीत की शिक्षा में गायन विद्या के अलावा समस्त कलाओं, साहित्य एवं संस्कृति के अध्ययन को सम्मिलित किया है। उसने संगीत की शिक्षा में गणित, ज्यामिति तथा प्रांरभिक विज्ञान को भी सम्मिलित किया है। व्यायाम तथा संगीत की शिक्षा शरीर एवं विचार शक्ति में संतुलन स्थापित करके मानव व्यक्तित्व को पूर्णता देती है। इससे व्यक्ति में विवेक जागृत होता है, अर्थात् उसमें सत्य के प्रति आस्था पैदा होती है और निर्णय की क्षमता आती हैं।

3 – विद्यार्थियों को 18 से 20 वर्ष तक की आयु अर्थात् 2 वर्ष सैनिक शिक्षा प्रदान की जाएगीं। इससे विद्यार्थियों में साहस, आत्म–नियंत्रण तथा अनुशासन की प्रवृत्ति बढ़ेगी और वे राज्य की रक्षा में सहायक होंगे।

(ब) – शिक्षा का द्वितीय स्तर – प्रथम स्तर की शिक्षा प्राप्ति के दौरान जो विद्यार्थी विशिष्ट होंगे, उन्हें ही केवल द्वितीय स्तर की शिक्षा प्रदान की जाती थी और शेष को सैनिक वर्ग में स्थान दे दिया जाता था। इस प्रकार द्वितीय स्तर की शिक्षा केवल कुछ विद्यार्थियों को ही दी जाती थी। द्वितीय स्तर की शिक्षा पुनः दो उप–स्तरों में विभाजित होती है,

1 – 20 से 30 वर्ष के विद्यार्थियों के लिये तथा

2 – 30 से 35 वर्ष के विद्यार्थियों के लिये

1 – 20 से 30 वर्ष के विद्यार्थियों के लिये शिक्षा – यह 10 वर्ष तक चलने वाली शिक्षा हैं इसके पाठ्यम में गणित, अंकगणित, ज्यामिति (रेखा गणित) ज्योतिष तथा स्वर विद्या को स्थान दिया गया है। इस पाठ्यक्रम को उत्तीर्ण करने में असमर्थ विद्यार्थी को सैनिक वर्ग में वापिस भेज दिया जाता था अथवा राज्य के सामान्य प्रशासनिक पद पर नियुक्त किया जाता था।

2 – 30 से 35 वर्ष के विद्यार्थियों के लिये शिक्षा – 30 वर्ष की आयु में होने वाली परीक्षा को उत्तीर्ण करने वाले विद्यार्थियों को अब 5 वर्ष की शिक्षा प्रदान की जाती थी। इसके पाठ्यक्रम में मुख्यतः दो विषय होते थे – द्वन्द्ववाद तथा दर्शन।

प्लेटो के अनुसार 35 वर्ष की आयु में इस पाठ्यक्रम को उत्तीर्ण करने के बाद ही ''दार्शनिक शासक'' अथवा ''पूर्ण अभिभावक'' बनने की आशा की जाती थी। उक्त पाठ्यक्रम को उत्तीर्ण करने के बाद ही आत्मा में सत्य के प्रति पूर्ण अनुराग एवं सद्गुण में आस्था होती है।

(स) – दार्शनिक शासक का व्यावहारिक प्रशिक्षण – 35 वर्ष की आयु तक विद्यार्थियों को पूर्ण सैद्धांतिक शिक्षा प्रदान की जानी चाहिये और अब उन्हें 35 से 50 वर्ष की आयु तक व्यावहारिक ज्ञान एवं क्रियात्मक अनुभव प्रदान किया जाता था। वस्तुतः वह इस 15 वर्ष के व्यावहारिक प्रशिक्षण के दौरान राज्य की सेवा करके शासन की कला में योग्यता प्राप्त करता था।

इस प्रकार 50 वर्ष की आुय में सही अर्थ में दार्शनिक शासक के बनने की क्रिया पूरी होती है और ''दार्शनिक शासक वर्ग'' में शामिल किया जाता है। अब वह राज्य का शासन संभालता है। भावी पीढ़ी की शिक्षा योजना का संचालन करता है और अपने उत्तराधिकारी तैयार करता है। प्लेटो के अनुसार 50 वर्ष की आयु के बाद भी आत्म साक्षात्कार तथा अंतिम सत्य के अन्वेषण के रूप में शिक्षा चलती रहती है। आयु बढ़ने के साथ–साथ दार्शनिक शासक अपने उत्तराधिकारियों के लिये राजनीति का क्षेत्र खाली करते जाते है और स्वयं अंतिम सत्य के अन्वेषण में लग जाते है।

शिक्षा व्यवस्था की विशेषताएं एवं गुण

1 – तत्कालीन यूनानी शिक्षा व्यवसथा का विकास – तत्कालीन यूनान में सपार्टा तथा एथेन्स नामक नगर राज्यों में दो भिन्न प्रकार की शिक्षा पद्धतियां प्रचलित थी। प्लेटो ने इन दोनों के गुणों को मिलाकर अपनी शिक्षा पद्धति प्रस्तुत की।

2 – सर्वांगीण विकास पर बल – प्लेटो ने अपनी शिक्षा पद्धति में व्यक्ति के शारीरिक, मानसिक व आध्यात्मिक तीनों ही पक्षों के पूर्ण विकास पर बल दिया है।

3 – मनोविज्ञान के अनुरूप शिक्षा – उसकी शिक्षा योजना मानव मन एवं मस्तिष्क के तीन प्रमुख प्रवृत्तियों – वासना, साहस व विवेक के अस्तित्व को स्वीकारती है। और उनके विकास में मदद देती है।

4 – शिक्षा व्यावहारिक है – प्लेटो की शिक्षा योजना तत्कालीन यूनान की सामाजिक आवश्यकताओं की पूर्ति करती है। यह नागरिकों को अपने सामाजिक कर्तव्यों एवं दायित्वों की

पूर्ति के योग्य बनाती है। शिक्षा योजना सामाजिक न्याय की स्थापना करके सामाजिक वर्गो के बीच ताल मेल स्थापित करती है और राज्य को एकता प्रदान करती है।

5 – शासक वर्ग का प्रशिक्षण – उसकी शिक्षा योजना ऐसे श्रेष्ठ शासकों को उत्पन्न करने का सामर्थ्य रखती है जो वैयक्तिक हित की तुलना में सार्वजनिक हित को महत्व दे तथा सुशासन की स्थापना के लिये प्रयत्नशील हो।

6 – नैतिक विकास पर बल – प्लेटो की शिक्षा योजना ''सद्गुण ही ज्ञान है'' के सिद्धांत को स्वीकारती है। प्लेटो शिक्षा द्वारा ऐसा वातावरण बनाना चाहता है जो नैतिक उत्थान में सहायक हो।

7 – जीवन भर चलने वाली शिक्षा व्यवस्था – प्लेटो ने शिक्षा को जीवन के कुछ काल तक चलने वाला कार्य नहीं माना है, अपितु उसने ज्ञान के अर्जन को जीवन भर चलने वाली प्रक्रिया माना है।

8 – सत्य व ईश्वर का साक्षात्कार – प्लेटो के शिक्षा सिद्धांत का आधार उसका प्रत्ययवादी दर्शन है। इस दर्शन के अनुसार प्लेटो की शिक्षा का अंतिम उद्देश्य है दृश्य जगत् से भिन्न एक ''अन्त्य वास्तविकता'' को प्रकट करना।

प्लेटो की शिक्षा योजना की सीमाएं व आलोचना

1 – मात्र अभिभावक वर्ग के लिये शिक्षा – प्लेटो ने केवल अभिभावक वर्ग (सैनिक व दार्शनिक वर्ग) के लिये ही शिक्षा योजना प्रस्तुत की है।

2 – उत्पदक वर्ग की उपेक्षा – उत्पादक वर्ग राज्य की कृषि, शिल्प, व्यापार तथा आर्थिक जीवन का आधार है, किन्तु प्लेटो इसकी शिक्षा की कोई व्यवस्था नहीं करता है। न्याय के सिद्धांत के अनुसार इस वर्ग को भी अपने समस्त कार्य विशिष्टता के साथ करने चाहिए किन्तु शिक्षा व प्रशिक्षण के अभाव में वे कार्य कौशल व विशेषज्ञता प्राप्त नहीं कर सकते है।

3 – शिक्षा में अत्यधिक एकरूपता का दोष – प्लेटो ने संपूर्ण शिक्षा को सदैव के लिये एक स्थायी व अपरिवर्तित पाठ्यक्रम का रूप दिया है। संपूर्ण राज्य में सभी छात्रों को एक ही प्रकार के पाठ्यक्रम व शैक्षणिक पाठ्यक्रम से गुजरना है।

4 – शिक्षा योजना में विरोधाभास – शिक्षा योजना में एक ओर राज्य की सेवा को अंतिम उद्देश्य माना गया है और दूसरी ओर अंतिम सत्य की खोज व इसका साक्षात्कार भी अंतिम उद्देश्य माना गया है।

5 – पाठ्यक्रम संबंधी आलोचना –

1 – पाठ्यक्रम सैद्धांतिक अधिक है और व्यावहारिक कम है।

2 – पाठ्यक्रम में दर्शन व गणित की तुलना में साहित्य की अत्यधिक उपेक्षा हुई है।

3 – पाठ्यक्रम इतना लम्बा है कि शिक्षा जीवन पर्यन्त चलती रहती है।

6 **– स्त्री व पुरूष की समान शिक्षा पर आपत्ति** – आलोचकों का मत है कि स्त्री व पुरूष में बौद्धिक समानता तो देखी जा सकती है, किन्तु उनके स्वभाव व भावनाओं में पर्याप्त भिन्नता देखी जा सकती है, इस भिन्नता के कारण स्त्री व पुरूष के लिये पूर्णतः एक ही प्रकार की शिक्षा एवं प्रशिक्षण उचित नहीं है।

7 – शिक्षा पर राज्य का नियंत्रण हानिप्रद है – प्लेटो ने शिक्षा पर राज्य के पूर्ण नियंत्रण का समर्थन किया है और कला व साहित्य पर राज्य की सेंसर व्यवस्था को मान्यता दी है। जब राज्य स्वयं शिक्षा का नियंत्रण व निर्देशन करता है तो

वह स्वयं एक शिक्षा संस्था का रूप ग्रहण कर लेता है। इससे राज्य पर अनावश्यक बोझ बढ़ता है और उसके अन्य सहज कार्यों पर विपरीत प्रभाव पड़ने की संभावना रहती है।

8 – दार्शनिकों के सफल शासक होने की संभावना नहीं – कोई भी शिक्षा–योजना एक सच्चे दार्शनिक का निर्माण करने की गारण्टी नहीं हो सकती है, क्यों कि इसके लिये अंतर्दृष्टि की जरूरत होती है जिसका संबंध स्वयं व्यक्ति की अपनी क्षमता से है।

मूल्यांकन

यद्यपि प्लेटो के शिक्षा संबंधी विचारों की अत्यधिक आलोचना की गई है, किन्तु इसके कुछ पक्ष भी है जिनकी प्रशंसा की जा सकती है। प्लेटो ने शिक्षा को सत्य की खोज का साधन माना है। शासन जैसे जटिल कार्य के लिए विशेष प्रकार की शिक्षा के महत्व को स्वीकारा है, शिक्षा को व्यक्तिगत नैतिकता एवं सार्वजनिक नैतिकता के बीच में संतुलन स्थापित करने के साधन के रूप में स्वीकारा है और राज्य की एकता व सुदृढ़ता की स्थापना के लिए शिक्षा के महत्व को प्रतिपादित किया है। उसने शिक्षा में शारीरिक, मानसिक व आध्यात्मिक विकास को स्थान दिया है। जिनकी प्रशंसा आज भी की जाती है। प्लेटो के शिक्षा संबंधी विवरण के कुछ अंश ऐसे भी है जो आधुनिक युग के अनुकूल है, जैसे प्लेटो द्वारा स्त्री व पुरूषों के लिये समान शिक्षा की व्यवस्था करना। इसी प्रकार आधुनिक राज्य प्राथमिक स्तर पर शिक्षा की अनिवार्य व्यवस्था करना अपना दायित्व मानते है और यह प्लेटो की राज्य द्वारा नियंत्रित शिक्षा सिद्धांत का सीमित मात्रा में अनुकरण है।

मैक्सी के अनुसार, ''प्लेटो की शिक्षा योजना अनेक दृष्टियों से आश्चर्यजनक रूप में आधुनिक लगती है।'' किन्तु इसके कुछ ऐसे भी पक्ष है जो आधुनिक युग की दृष्टि से अत्यधिक आलोचना के योग्य है। यह अपनी प्रकृति से कुलीन वर्गीय है और बहुसंख्यक, समान नागरिकों की पूर्ण उपेक्षा करती है, कला व साहित्य के क्षेत्र में स्वतंत्र अभिव्यक्ति कर नियंत्रण लगाती है तथा राज्य को साध्य व व्यक्ति को साधन मानती है। किन्तु कुल मिलाकर प्लेटो की संपूर्ण शिक्षा व्यवस्था में अवगुणों की तुलना में गुण ही अधिक है।

संदर्भ –

1 – प्रमुख राजनीतिक विचारक – डॉ श्रीराम वर्मा

पृष्ठ संख्या – 1, 3, 39, 40, 41, 42, 43

2 – प्रतिनिधि राजनीतिक विचारक – डॉ इकबाल नारायण

पृष्ठ संख्या – 03, 05, 18, 19, 23

3 – राजनीतिक विचारक विश्वकोष – ओमप्रकाश गाबा

पृष्ठ संख्या – 211, 212, 214, 216